DADHEECH INTERNATIONAL TRADE FOUNDATION

DADHEECH INTERNATIONAL TRADE FOUNDATION INITIATIVE

Imprint

DITF BULLETIN

अंक-12 ,वर्ष-1 दिसंबर-2021

Get The Latest Scoop
ON THIS MONTH'S TRENDS

Amalgamation of Learning

kaleidoscope of thoughts and vision

OUR MOTTO
Sharing is Caring

DECEMBER EDITION

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION INITIATIVE

मुख्य संपादक
डॉ. तरुणा दाधीच

फाउंडर प्रेसिडेंट
देवेश दाधीच

प्रकाशक
शोभा दाधीच

E-mail- dadheech@ditfindia.org

सम्पादकीय आलेख

" विश्वास "

हम वर्ष के 2021 के अंतिम माह में प्रवेश कर रहे हैं। यह अंतिम माह हमारे वर्ष भर के कार्यों का मूल्यांकन माह है , क्या हमने जिस विश्वास के साथ इस वर्ष में पदार्पण किया वह पूरे हो पाए हैं या कहीं कुछ छूट गया है । छूटे हुए हेतु विश्वास एक सीढ़ी है कि नूतन वर्ष में वह पूर्ण कर ही लेंगे ,क्योंकि अविश्वास हमें परेशान रखता है । ऐसे में हर सुबह इस विश्वास के साथ उठें कि आज का दिन विश्वसनीय होगा । कभी-कभी विषमताएँ भी आश्चर्यजनक रूप से हमारे हित में आती हैं। अतः हमें अपने हृदय को विश्वास की दिशा में मोड़ कर रखना होगा। नववर्ष के आगमन के साथ नए संकल्पों को गढ़ना होगा, क्योंकि

> 'एक अंत है , एक शुरुआत
> जैसे रात से सुबह, सुबह से रात एक में याद है, दूसरे में आज
> एक तजुर्बा, दूसरे को विश्वास।।'

यह विश्वास हमारे डीआईटीएफ पर आप परिजनों ने किया।

वर्षभर में संचालित समस्त गतिविधियों में आप सभी ने उत्साह से भाग लेकर डीआईटीएफ को गौरवान्वित किया है। बालक वर्ग से वरिष्ठ जन तक इसके साक्षी रहे हैं। गत माह डीआईटीएफ द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संपूर्ण भारत से अन्य प्रविष्टियां प्राप्त हुई, जिसमें सुश्री दिव्या काकड़ा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्हें 5000रु. प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। यही नहीं इस पुरस्कृत कृति को परम पूज्य गोविंद गिरी जी महाराज को हमारे फाउंडर प्रेसिडेंट देवेश जी दाधीच एवं प्रकाशक श्रीमती शोभा जी दाधीच द्वारा भेंट किया गया। उन्होंने अति प्रसन्नता से इस मिशन को शुभकामनाएं दी।

दिनांक 24, 25 एवं 26 दिसंबर को जैपुरिया क्रिकेट एकेडमी में डीआईटीएफ द्वारा डीआईटीएफ प्रीमियर लीग का आयोजन किया जाएगा। जिसमें भारत वर्ष से कुल 8 टीमें सम्मिलित होंगी । हम बधाई प्रेषित करते हैं डीआईटीएफ परिवार के दो सदस्य सीए उमा जी और सीए हर्षित जी जो जल्द ही परिणय सूत्र में बंधने जा रहे हैं।

आप सभी सराहनीय कार्य कर रहे हैं एवं प्रशंसा के पात्र हैं। डीआईटीए परिवार आप सभी का हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

शुभम् भवतु।।

संपादक की कलम से......

डॉ.तरुणा दाधीच

मुख्य संपादक

-परम पूज्य गोविंद गिरि जी महाराज
को भेंट करते हुए देवेश जी दाधीच एवं शोभा जी दाधीच

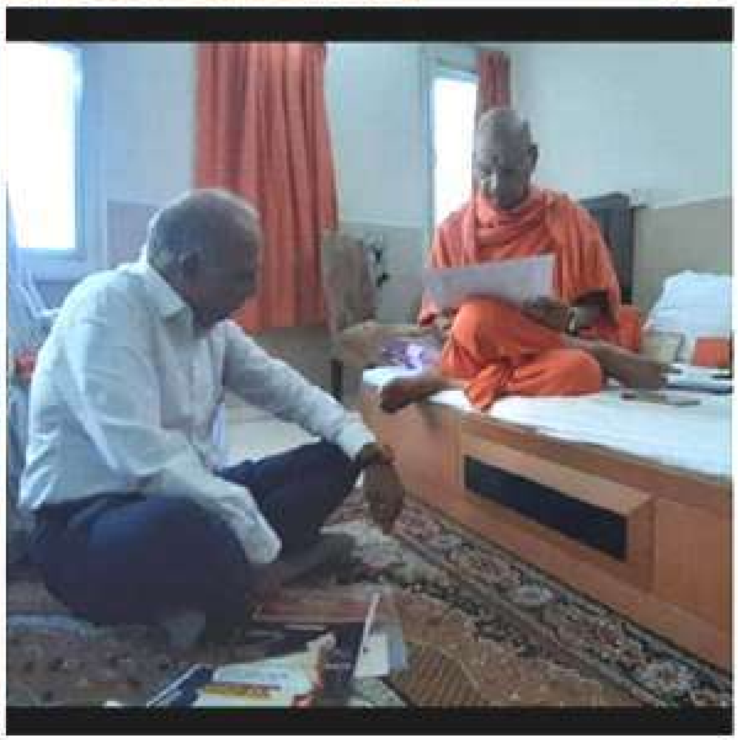

Interesting Story of Lightning

-Himanshu Dadhich
GRADE:- Class 12

❖ *In olden days lightning was considered as an atmospheric flash of supernatural origin. It was believed to be great weapon of Gods. But today the phenomenon of lightning can be explained scientifically by elementary principals of physics.*

❖ *Atmospheric electricity arises due to the separation of electric charges. In the ionosphere and Magnetosphere strong electric current is generated from the solar terrestrial interaction. In the lower atmosphere, the current is weaker and is maintained by thunderstorm.*

❖ *There are ice particles in the clouds, which grow, collide, fracture and break apart. The smaller particles acquire positive charge and the larger ones negative charge. These charged particles get separated by up drifts in the clouds and gravity. The upper portion of the cloud becomes positively charged and the middle negatively charged, leading to dipole structure. Sometimes a very weak positive charge is found near the base of the cloud. The ground is positively charged at the time of thunderstorm development. Also, cosmic and radioactive radiations ionize air into positive and negative ions and the air becomes(weakly)electrically conductive. The separation of charges produce tremendous amount of electrical potential within the cloud, as well, as between the cloud and ground. This can amount to millions of volts and eventually the electrical resistance in the air breaks down and lightning flash begins and thousands of amperesof current flows. The electric field is of the order of 10^5 V/m. A lightning flash is composed of a series of strokes with an average of about four and the duration of each flash is about 30 seconds. The average peak power per stroke is about 10^{12} watts. During fair weather also there is charge in the atmosphere. The fair weather electric field arises due to the existence of a surface charge density at ground and an atmospheric conductivity, as well as, due to the flow of current from the ionosphere to the earth's surface, which is of the order of square meter. The surface charge density at ground is negative; the electric field is directed downward. Over land the average electric field is about 120 V/m. Over the entire earth's surface, the total negative charge amount to about 600kc. An equal positive charge exists in the atmosphere. This electric field is not noticeable in daily life. The reason why it is not noticed is that virtually everything, including our bodies, is conductor compared to air.*

भारतीय संस्कृति में यज्ञोपवीत संस्कार का महत्व

यशवंत दाधीच

BSc. Bed. सम्पादक ''अथर्वा'' ई–पत्रिका चित्तौडगढ

हमारी संस्कृति संस्कारों का एक अथाह सागर है। सस्कार का सामान्यतः अर्थ शुद्धिकरण से लिया जाता है, एवं इसी क्रम में मानव जीवन को आयु अनुसार गर्भाधान ,नामकरण से लेकर विवाह ,अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कारों में विभाजित किया गया है। इसमें यज्ञोपवीत संस्कार को जीवन में एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है।

यज्ञोपवीत जिसे जनेउ ,उपवीत, ब्रम्हसूत्र , व्रतबन्ध, बलबन्ध, यज्ञसूत्र आदि नामों से भी जाना जाता है, यह दो शब्दो से मिल कर बना है यज्ञ एवं उपवीत अर्थात ज्ञान के समीप आना । हमारे ग्रन्थों नें यह माना है कि मनुष्य जन्म के समय पशु के समान होता है, ''**जन्मना जायते शुद्र संस्काराद् द्विज उच्यते**''। आयु अनुसार यज्ञोपवीत संस्कार होने पर मनुष्य द्विज कहलाने लगता है । द्विज का शाब्दिक अर्थ दूसरा जन्म या दोबारा जन्म लेना है, पहला जन्म माता द्वारा एवं दूसरा यज्ञोपवीत संस्कार से।

मातुरग्रेधिजननम, द्वितीयम मोज्जीबन्धम।

हमारे शास्त्रों के अनुसार यज्ञोपवित सस्कार होने के बाद ही बालक को विद्या अध्ययन एवं यज्ञ आदि सम्पादित करने के योग्य माना जाता था, ऐसा हमें हमारें धर्म ग्रन्थों में देखनें को भी मिलता है जहां बालक को यज्ञोपवीत धारण करनें के उपरान्त गुरू के आश्रम के विद्या अध्ययन के लिये भेज दिया जाता था क्योकि उस समय गरूकुल प्रथा प्रचलित थी ।यज्ञोपवीत संस्कार के लिये आयु अनुसार निर्धारण किया गया है। मनु ने तत्कालीन समाज को व्यवस्था देने के दृष्टिकोण से समाज को चार वर्णो में विभाजित किया ,ब्राम्हण,वेश्य,क्षत्रिय एवं शुद्र। इसमें प्रथम तीन वर्णो को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार दिया गया एवं तीनों ही वर्ण के लिये आयु निर्धारण किया गया है।

गर्भाष्टमेष्टमें वाब्दे पंचमें सप्तमेंअपि वा, द्विजत्वं प्राप्तुयाद्विप्रो वर्षेत्वेकादशें नृपः।

ब्राम्हण वर्ण के बालक आठ से सोलह वर्ष ,क्षत्रिय वर्ण के बालक 11 से 22 वर्ष एवं वेश्य वर्ण कें बालक 12 से 24 वर्ष तक की आयु में यज्ञोपवीत धारण कर सकतें है।चूंकि बालक को यज्ञोपवीत के उपराप्त ही विद्या अध्ययन का अधिकारी माना गया अतः ब्राम्हण वर्ण में बालक को उसके बौद्विक स्तर के अधार पर 5 वर्ष की आयु में भी यज्ञोपवीत सस्ंकार कर दिया जाता था।

यज्ञोपवीत दिखाई देने में तीन धागों की सहज वृताकार रचना है ।ये तीन धागें मनुष्य के जन्म के साथ उत्पन्न तीन प्रकार के ऋण से सम्बन्धित है,देव ऋण,पितृ ऋण एवं गुरू या ऋषि ऋण। यह ब्रम्हा द्वारा उपलब्ध कराया गया एक सहज पुरूस्कार है।इसे स्वयं ब्रम्हा ने बनाया विष्णु ने इसे तीन गुना किया एवं शिवजी ने इसे गायत्री मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित किया तथा ब्रम्हा ने गांठ एवं 32 विद्या की प्रतीक मानी गई हैं। सनातन मत अनुसार इसे ब्रम्हा विष्णु एवं महैश का प्रतीक माना गया है।

यज्ञोपवीत धारण करने की विधि के अर्न्तगत बालक को ब्रम्हचारी वेश धारण कराया जाता है,एक दण्ड दिया जाता है मुण्डन कराया जाता है एवं तीन धागों की यज्ञोपवीत धारण कराई जाती है जो गुहस्थ होने पर छः धागों की हो जाती है अर्थात तीन उसकी पत्नि की । संस्कार कर्मकाण्ड प्रकिया अनुसार सम्पन्न कराया जाता हैं । विशेष यह है कि बालक को किसी योग्य गुरू के द्वारा ंगुरूमन्त्र दिया जाता है, जो साधारणतः गायत्री मन्त्र होता है, इस प्रकार **यज्ञोपवीत दीक्षा का महापर्व है।**

मीर्षि दयानन्द के अनुसार ब्रम्हचर्य, ग्रहस्थ एवं वनवास आश्रम तक यज्ञोपवीत धारण की जा सकती है सन्यास आश्रम में इसका त्याग किया जा सकता है

यज्ञोपवीत क्यों आवश्यक है, यदि पर चर्चा करें तो स्पष्ट होता है कि यज्ञोपवीत धारण करते ही बालक में अपने माता पिता, गुरू एवं देवता के प्रति उत्तरदायित्वों की अनुभूति प्रारम्भ हो जाती है साथ यज्ञोपवीत के नियमों के पालन के कारण स्वयं के शरीर के प्रति स्वच्छता की भावना विकसित होती है। परिवार में आदर की भवना का विकास होता है एवं पवित्रता का अहसास होता है। यज्ञोपवीत धारण करने के पीछे वैज्ञानिक आधार भी है जब कोई व्यक्ति यज्ञोपवीत अपने दायें कान पर लगाता है तों उससें कान की नाडी जिसे सूर्यनाडी भी कहा जाता है ,पर दवाब पडता है, जिससे मल मुत्र विसर्जन तन्त्र में लाभ होता एवं कब्ज आदि पेट के रोग नहीं होते साथ ही रक्त चाप एवं हृदय रोग जेसे रोगों के खतरें में भी कमी होती है।

मानव जीवन के 16 सस्ंकारों को आयु अनुसार विभाजित किया गया है एवं इनको उसी आयु अनुसार सम्पन्न किया जाता है ।

यज्ञोपवीत संस्कार विवाह के समय ही किया जावे ऐसा कोई मत हमारे विद्वानों द्वारा नहीं बताया गया है। अपितु हम अपनी सुविधानुसार बालक के विवाह या परिवार में किसी अन्य सदस्य के विवाह के सु–अवसर बालक का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न करा देते हैं क्यों कि एसें अवसरों पर हमारे परिजन मित्र आदि उपलब्ध होतें जिन्हें मात्र यज्ञोपवीत संस्कार के आयोजन पृथक से कर बुलाया जाना कदाचित संभव नहीं हो पाता है, यह हमारी अपनी व्यवस्था है।

यहां एक मत का उल्लेख करना उचित होगा जिसके अनुसार यज्ञ के समय तक उपवीत रखा जाना है। इसका आधार यह भी हो सकता है कि, हम जब किसी बडे यज्ञ का आयोजन करते है तो उस समय यज्ञ में बैठने वाले व्यक्ति जो यजमान कहे जाते है उनको दशविध स्नान करा यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है एवं यज्ञ अवधि में उनसे उसी प्रकार की पवित्रता एवं नियमें की पालना की अपेक्षा की जाती है। दुर्भाग्यवश इस मत का अधिक प्रयोग हो जाने से आजकल हमें नई पीढी में एक विशेष परिवर्तन देखने को मिलता है कि बालको को यज्ञोपवीत सस्कार तो करा दिया जाता है परन्तु इसके उपरान्त वे यज्ञोपवीत धारण नहीं करते।

यज्ञोपवीत परिवार में किसी प्रकार के सूतक होने पर शव स्पर्श या दाह संस्कार में सम्मिलित होने पर , उपवीत के किसी धागे के टूट जाने पर एवं 6 माह से अधिक पुरानी होने पर बदलने का मत है। कुछ ब्राम्हण जन श्रवण मास में रक्षाबन्धन पर यज्ञोपवीत बदलतें है, जिसें श्रावणी कहा जाता है।

यज्ञोपवित हमारें शरीरिक एवं मानसिक पवित्रता के लिये ब्रम्हा द्वारा उपलब्ध एक सहज पुरस्कार है जो परम पवित्र है जो आयु को बढाने वाला एव सभी प्रकार से बन्धनों से मुक्त कराने वाला है। यह हमारे बल एवं तेज में वृद्वि करे।

यज्ञोपवीत परमं पवितं प्रजापर्त्येज सहजंपुरस्तात
आयुष्यंमुग्र प्रतिमुच्चं शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेज।

संस्कार कब किया जावे इस पर विवाद नहीं हो, इस सम्बन्ध में कुछ ज्योतिषकारों ने बताया कि परिवार में किसी मांगलिक कार्य के अवसर पर बालक के चन्द्र आदि का अध्ययन कर शुभ समय पर यह कार्य सम्पादित किया जा सकता वर्तमान समय में आवश्यकता है तो इस बात की है कि हम अपने बालको को यज्ञोपवीत धारण अवश्य करावें अन्यथा आने वाली पीढी इन 16 सस्कारों में में से एक संस्कार कम कर, इससे अनभिज्ञ हो जावेगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं इनसे किसी का सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

समुद्र मंथन

-भावना सुरेंद्र बिसावा
दिव्यम् एस्ट्रोवर्ल्ड (DAW)
धूले ,महाराष्ट्र

समुद्र मंथन का कारण

एक बार भगवान भोलेनाथ के दर्शनों के लिए दुर्वासा ऋषि अपने शिष्यों के साथ कैलाश जा रहे थे। मार्ग में उन्हें देवराज इंद्र मिले। इंद्र ने दुर्वासा ऋषि और उनके शिष्यों को भक्ति पूर्वक प्रणाम किया। तब ऋषि दुर्वासा ने इंद्र को आशीर्वाद देकर विष्णु भगवान का पारिजात पुष्प प्रदान किया। इंद्रासन के गर्व में चूर इंद्र ने उस पुष्प को अपने ऐरावत हाथी के मस्तक पर रख दिया। उस पुष्प का स्पर्श होते ही ऐरावत सहसा विष्णु भगवान के समान तेजस्वी हो गया। उसने इंद्र का परित्याग कर दिया और उस दिव्य पुष्प को कुचलते हुए वन की और चला गया।

दुर्वासा ऋषि का श्राप

इंद्र द्वारा भगवान विष्णु के पुष्प का तिरस्कार होते देखकर दुर्वासा ऋषि के क्रोध की सीमा न रही ।उन्होंने देवराज इंद्र को "श्री"(लक्ष्मी) से हीन हो जाने का श्राप दे दिया। दुर्वासा मुनि के श्राप के फल स्वरुप माता लक्ष्मी उसी क्षण स्वर्ग लोक को छोड़कर अदृश्य हो गई। माता लक्ष्मी के चले जाने से इंद्र आदि देवता श्री हिन और निर्बल हो गए ।उनका वैभव लुप्त हो गया। इंद्र को बलहीन जानकर दैत्यों ने स्वर्ग पर आक्रमण कर दिया और देवताओं को पराजित करके स्वर्ग के राज्य पर अपनी परचम फहरा दिया। तब इंद्र देवगुरू बृहस्पति और अन्य देवताओं के साथ ब्रह्मा जी की सभा में उपस्थित हुए। तब ब्रह्माजी बोले देवेंद्र भगवान विष्णु के भोग रुपी पुष्प का अपमान करने के कारण रूष्ट होकर भगवती लक्ष्मी तुम्हारे पास से चली गई है। उन्हें पुनः प्रसन्न करने के लिए तुम भगवान नारायण की कृपा दृष्टि प्राप्त करो। उनके आशीर्वाद से तुम्हें खोया वैभव पुनः मिल जाएगा।

श्राप से मुक्ति का उपाय

सभी देवता गण भगवान श्री हरि विष्णु जी के पास जाकर उनकी अनेक प्रकार से स्तुति करके तथा इंद्र आदि देवताओं ने भगवान नारायण से क्षमा प्रार्थना की। तब भगवान विष्णु ने कहा कि सभी देवगणों एवं दैत्यों को मिलकर क्षीरसागर को मथना होगा अर्थात तुम्हें समुद्र मंथन करना होगा। इसके लिए तुम्हें दैत्यों से संधि करनी होगी। भगवान विष्णु के परामर्श के अनुसार इंद्र आदि देवगण दैत्यराज बली के पास संधि का प्रस्ताव लेकर गए और उन्हें अमृत के बारे में बताकर समुद्र मंथन के लिए तैयार कर लिया।

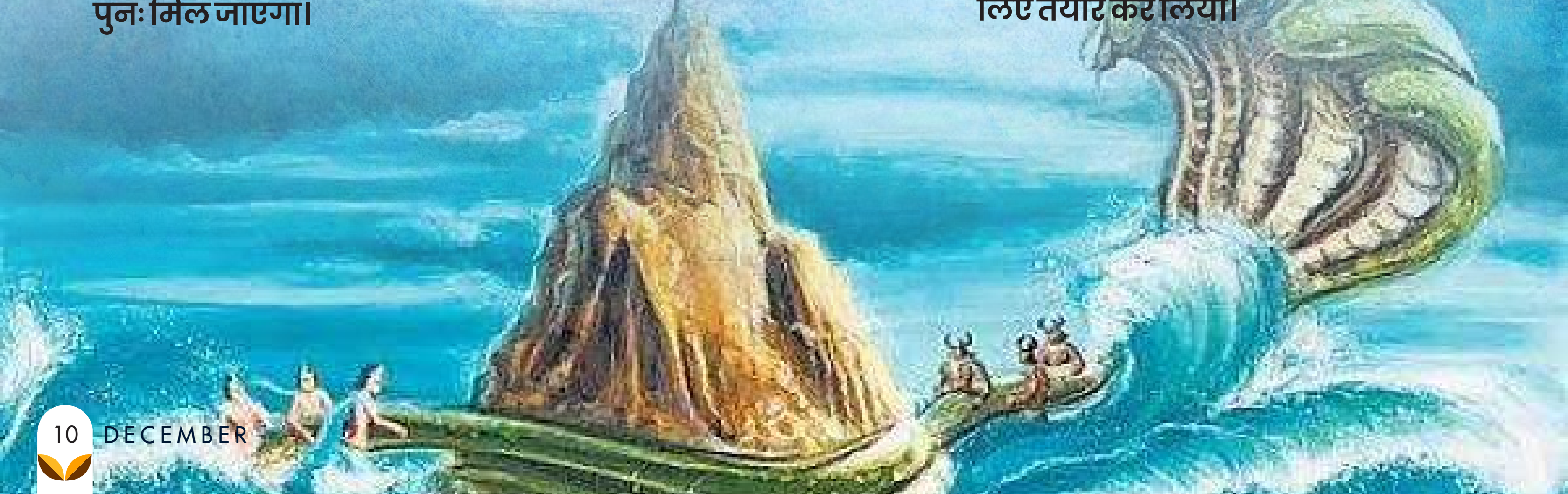

तभी सभी दैत्यों और देवों ने मिलकर क्षीरसागर में मंदराचल पर्वत को मथनी तथा नागराज वासुकी को नेती बनाकर बड़े वेग से अमृत मंथन आरंभ किया ।स्वयं भगवान विष्णु ने कछुए का रूप धारण करके मंदराचल पर्वत को अपनी पीठ पर रखा ताकि मथनी स्थिर रहे और समुद्र में डूब ना जाए। तब फिर से समुद्र मंथन आरंभ किया परंतु दैत्य और देवगण सभी शक्तिहीन हो गए और समुद्र को मथने में असमर्थ रहे तभी ब्रह्मा जी की अनुमति से सभी ने महामाया, महाशक्ति की स्तुति की। तब महामाया विराट रूप में प्रकट हुई। हजारों मुख, पैर और हाथ वाली हजार सूर्य के समान तेज वाली मातृकाओ से पूजित देवी अति सुंदर समुद्र के तीर पर प्रकट हुई। देवी ने समस्त औषधियों को समुद्र में डालकर क्षीरसागर को दही बनाकर महादेवी ने अत्यंत मंथन किया और फिर उससे रत्न उत्पन्न हुए। तब देवताओं और दैत्यों ने प्रसन्न होकर जगदंबिका की स्तुति की। उस दिन से यह संसार में "दधिमथी" नाम से प्रसिद्ध हुई।

समुद्र मंथन के 14 रत्न

कालकूट विष

कामधेनु गाय

उच्चैः श्रवा घोड़ा

ऐरावत हाथी

कल्पवृक्ष

माता लक्ष्मी

चंद्रमा

शंख

कौस्तुभ मणि

अप्सरा

वारुणी

पारिजात

भगवान धन्वंतरि

अमृत

मेरे मतानुसार आज के इस युग में प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपने भीतर झांक कर स्वयं ही स्वयं का मंथन करें और देखें कि हमारे भीतर कौन से अवगुण है? और कौन से सद्गुण है? ताकि समस्त अवगुणों का त्याग करके अपने सद्गुणों से स्वयं को और संसार को सुशोभित करें।

आई नाम जपा....

हदयी आईचे। माझ्या आहे स्थान।
तिने जीवदान। मज दिले।।
तिच्या ममतेला। जगी नाही तोड।
नाम किती गोड। आहे तिचे।।
जन्मा पुन्हा पुन्हा। यावेसे वाटते।
व्हावेसे वाटते ।तान्हा बाळ।।
बोट पकडून ।तिचे चालायचे।
मज निजायचे। कुशीमध्ये।।
नको वाटे जीवा। आईविना काही।
मज कशाचाही। मोह नाही।।

आई असताना। गरीब म्हणावे।
कशाला रडावे। पैशासाठी।।
आई एकवेळ। उपाशी झोपेल।
घास भरवेल। लेकरांना।।
आई नाम जपा। काळ टळणार।
सुख मिळणार। क्षणोक्षणी।।
मी आहे भक्त। मायमाऊलीचा।
बाळ आहे तिचा। लडिवाळ।।

-महेश सुरेंद्र बिसावा
कक्षा-8
धूले(महाराष्ट्र)

The World

-Khushi sharma

The world is bleeding in pain.
The world is crying looking at it's state.
The world is asking for help.
The world is still dreaming of a better place.
The world is trying to be better.
The world is astonishing looking at itself .
The world is still convincing itself to wait.
The world is still pleasing the people to save it
But what are people doing
People are polluting,
People are harming,
People are destroying,
JaPeople are aggravating,
People are not caring,
For the world that is so beautiful.
People are not caring,
For the world that made them.
People are not caring,
For the world sacrificing itself for them.
It's time to stand for the world that is ours,
It's time to stand for the world that did everything for us,
It's time to stand for making better world for ourselves

क़ाबिल .....

दिल आपका ज़नाब कुछ क़ाबिल होना चाहिए,
ना हो कभी खराब कुछ क़ाबिल होना चाहिए।
परवाना ख़ुद- ब- ख़ुद आ कर जल जाएगा,
शमाँ का शबाब कुछ क़ाबिल होना चाहिए ।

ज़माना रुबरु ,अपना सिर झुकाएगा,
हर आपका जवाब कुछ क़ाबिल होना चाहिए।
हरदम ये हया जो महफ़ूज़ रहेगी,
चेहरे का नक़ाब कुछ काबिल होना चाहिए।

होगी हसरतें पूरी कीजिए यकीं ,
आदमी के ख़्वाब कुछ काम क़ाबिल होने चाहिए।
पीने को रिन्द 'बीरा' आयेगा दौड़ता ,
मयख़ाना-ए-शराब कुछ क़ाबिल होना चाहिए।

बालकृष्ण जोशी 'बीरा'
सेवानिवृत्त प्राध्यापक (डाईट)
शाहपुरा (भीलवाड़ा)

हम लड़के

कुणाल आचार्य
राजसमंद(राजस्थान)

हम लड़के भी रोते है पर खबर किसी को ना होती ।
हृदय हमारा दुखता है पर भनक किसी को ना होती ।।

माँ बाबू जी का दिल दुखता तो हम लड़के रोते है।
भाई बहन से झगड़ा होता तो हम लड़के रोते है।
चोट देह की तो हम हंसते हंसते ही सह जाते है,
पर जब कोई ख़्वाब टूटता तो हम लड़के रोते है।।
लेकिन लड़कों के आँसू की कदर किसी को ना होती।
हम लड़के भी रोते है पर खबर किसी को ना होती

जब भी कोई अपना रुठे तो हम लड़के रोते है।
जब भी कोई बन्धन टूटे तो हम लड़के रोते है।
सुबह शाम हाथों को जिसके साथ की आदत लगी हुई,
उस लड़की का साथ जो छूटे तो हम लड़के रोते है।।
लेकिन लड़कों के रोने की फ़िकर किसी को ना होती।
हम लड़के भी रोते है पर खबर किसी को ना होती।।

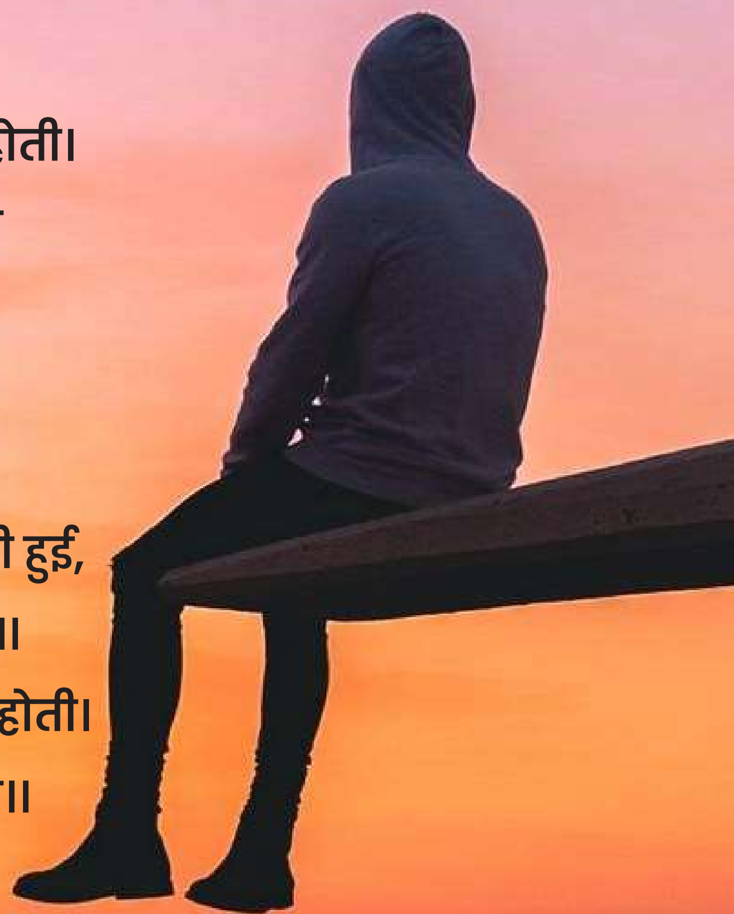

STRATEGY CONCEPTS

Rohit Dadheech
B.Tech(E.C.) jaipur
Pursuing MBA from Indian Institute of Management Sirmaur

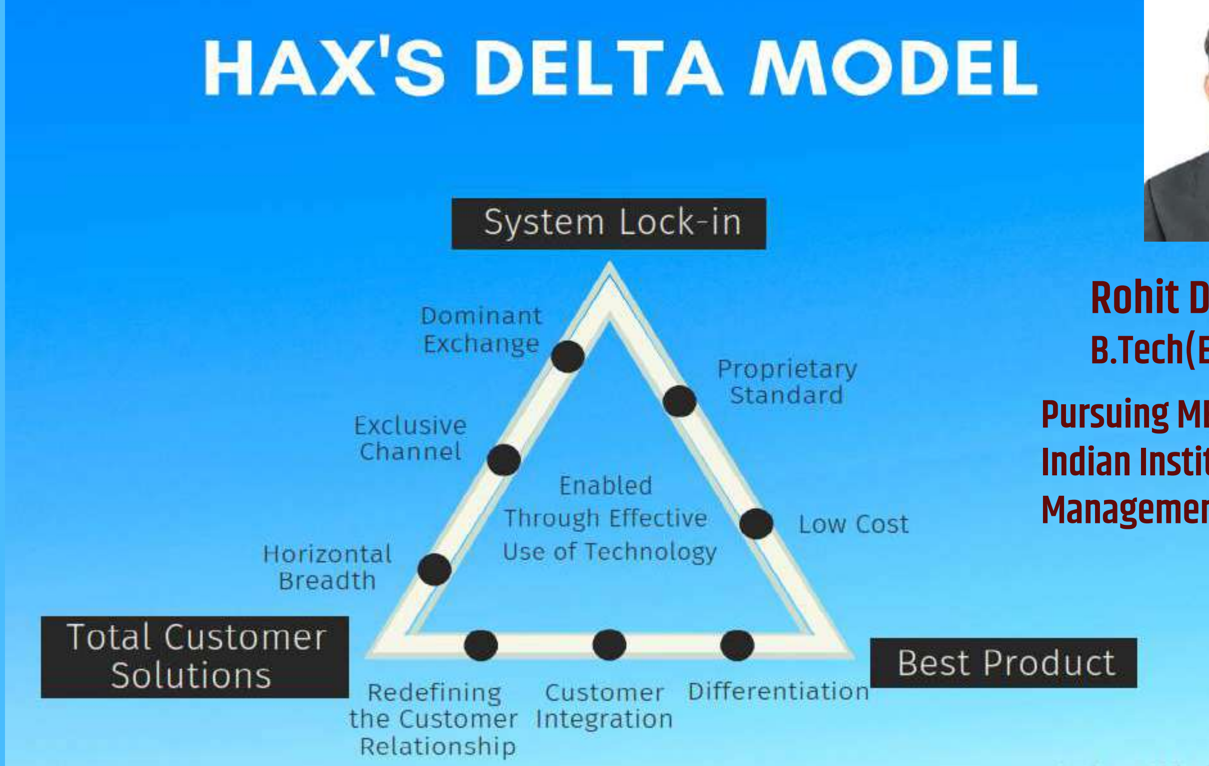

Hax's Delta Model

- Hax's Delta Model is a consumer-centric approach to strategic management. The aim is to create a powerful bond between the company and the customer.
- The workings of Hax's Delta Model are accurately described through a diagrammatic representation called "The Triangle," which describes three alternative ways to put into effect the Delta Model's business management strategies. The three strategic methods are :

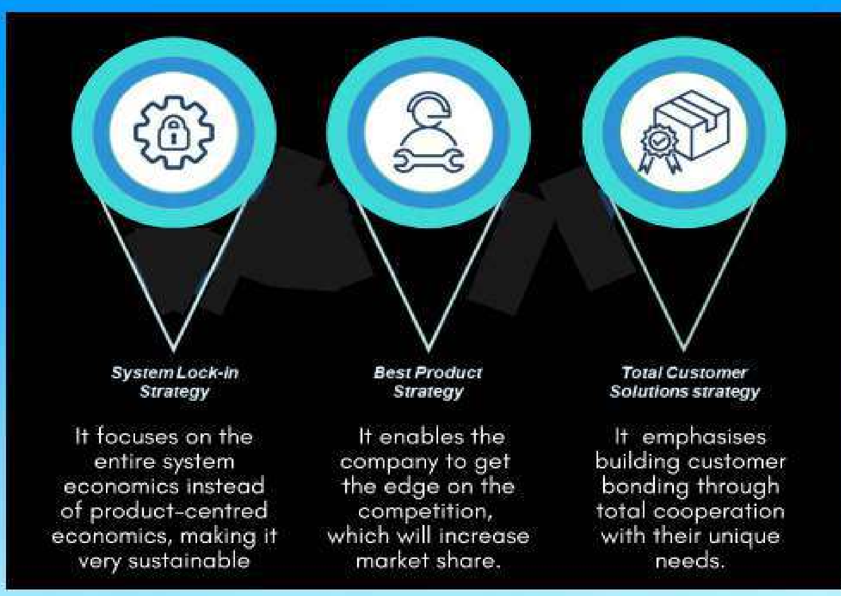

Hax's Delta Model
V/S
Porter's Five Forces

The Delta model does not focus on competition, unlike Porter's five forces. One of Porter's forces is the bargaining power of customers (haggling), whereas the Delta model aims to create a relationship with the customer and not see them as competition. Therefore, a negative of the Delta model is price, as putting the customer first and building a solid customer rapport may mean that the company will struggle to increase prices.

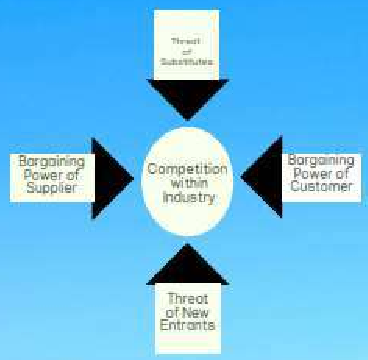

Porters "Five Forces"

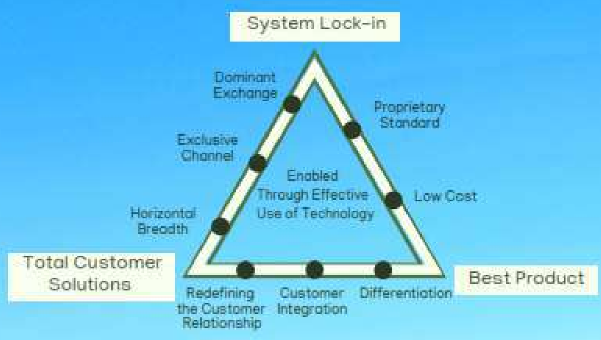

Hex's "Delta Model"

Examples of Hex's Delta Model

Sony Wega

Adopted the Best Products positioning strategy by offering unique, differentiated products and found success.

Intel

Successfully followed the System Lock-In strategy, much like Microsoft.

Nucor Steel

Adopted the cost minimization aspect of Best Products positioning and achieved incremental success.

Fidelity

Adopted the Total Customer Solutions strategy and focused entirely on maximizing financial utility for their consumers by providing complete coverage of financial services to their customers.

Saturn Corp

Adopted the Total Customer Solutions strategy very wholly and efficiently redefined the purchasing experience of a car in the US.

प्रथम पुरस्कृत कृति-

द्वितीय पुरस्कृत कृति-

DITF mega cricket tournament with 8 teams participating.

List of Respected people who had Contributed for our mega event...

1. **Rs 1,11,000/- by Raj Kumari Orissa**
2. **Rs 1,00,000/-by Gopalji Sharma (Coimbatore)**
3. **Rs 1,00,000/- from Rajkumar ji (Sakseria)**
4. **Rs 11,000/- Manoj Vyas (Bharahin)**
5. **Rs 7,500/- Amit Agarwal**
6. **Rs 5,000/- CA Arun Dayama (Singapore)**